ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—08/09/2020   कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

प्रिय बच्चों अभी तक आपने जगदीश चंद्र माथुर की एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का पठन-पाठन किया। आज मैं 'रीढ़ की हड्डी 'एकांकी की सत्यता वर्तमान समाज के में पूर्णरूपेण व्याप्त है,की चर्चा करने जा रही हूँ, आप इसे अच्छी तरह से पढ़ेंगे व समझेंगे।

<u>'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में व्यक्त सामाजिक व्यंग्य</u>

हिंदी के प्रसिद्ध लेखकों में तथा नाटककार के रूप में जगदीश चन्द्र माथुर का नाम उल्लेखनीय है। 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में जगदीश चंद्र माथुर ने भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त रूढ़ीवादी मानसिकता पर प्रहार करते हुए स्त्रियों की शिक्षा, स्त्रियों का विकास, उससे उत्पन्न आत्मविश्वास और साहस को दर्शाया है। इस एकांकी में रामस्वरूप और प्रेमा ने अपनी बेटी को शिक्षा देकर समाज के लिए एक उदाहरण पेश किया है रामस्वरूप ने बेटी उमा को पढ़ाया, लिखाया और एक अच्छे पिता का कर्तव्य निभाया हो बिल्कुल ऐसा प्रतीत होता है, लेकिन उसकी माँ को उसकी सादगी से चिंता होने लगती है उमा को पाउडर लाली लगाने के लिए कहती हैं। आज उसे लड़का देखने के लिए आने वाला है रामस्वरूप अपनी बेटी का विवाह उनके मित्र गोपाल प्रसाद के बेटे शंकर से करवाना चाहता था। जो पढ़ा लिखा होने के साथ-साथ अच्छे घर का है, लेकिन लड़के का

पिता गोपाल प्रसाद पुरानी विचारधारा में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। स्वयं अपने बेटे को पढ़ाते हैं लेकिन बहू कम पढ़ी- लिखी हो घर -गृहस्थी संभाल ले ऐसी हो, इस विचारधारा को मानने वाले थे। उमा कॉलेज तक पढ़ी हैं लेकिन अभी तक गोपाल प्रसाद को नहीं पता है क्योंकि उनका मानना है कि स्त्रियां घर -परिवार संभाले, नौकरी करने के लिए बाहर न जाएँ ।प्रेमा यानी उमा की मां प्रयास करती हैं कि लड़की की शादी हो जाए। इसीलिए बहुत सावधानी बरतती है कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती लेकिन जब गोपाल प्रसाद ने कहा कि स्त्रियां घर- परिवार के काम में निपुण हो और घर -गृहस्थी ही संभाले। गोपाल प्रसाद कहते हैं- "जी हाँ साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी -लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद-से-हद मैट्रिक होनी चाहिए .....क्यों शंकर?"उनका मानना था कि – "लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए, एम्.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएं भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगी और पोलिटिक्स वगैरह बहस करने लगीं तो हो चुकी गृहस्थी ! जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।" उमा जब पान लेकर मेहमानों के सामने आती है तो उसका चश्मा देखकर चौंक जाते

हैं | पढ़ाई की वजह से तो नहीं आया चश्मा ? लेकिन राम स्वरूप बात को घुमा देते है कि आँखों में दर्द की वजह से लगाना पड़ा है | उमा के बारे में गोपाल प्रसाद सोचता है चल तो ठीक है चेहरा भी ठीक है अरे कुछ गाना बजाना सिखा है? पेंटिंग, सिलाई, बुनाई और कहीं ईनाम जीता है या नहीं सारे सवालों के जवाब रामस्वरूप ही देते हैं| गोपाल प्रसाद कहता है राम स्वरूप जी इसे भी बोलने दीजिए इसका मुंह भी खुलना चाहिए| उमा कब से चुप चाप सुन ही रही थी उमा कहती है –"बाबूजी ! जब कुर्सी –मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है| पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना ....."उतना सुन के राम स्वरूप उमा उमा चिल्लाते हैं| लेकिन उमा कहती है बाबूजी मुझे कह लेने दीजिए " ये जो, महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती ? क्या वे वेबस भेड़ –बकरियां हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख –भालकर खरीदते हैं?

उस समय उमा उनके विचारों से सहमत नहीं होती है लड़के बाहर जा सकते हैं काम कर सकते हैं लड़कियां क्यों नहीं कर सकती ? उमा की बात सुनकर गोपाल प्रसाद उनका अपमान होने की बात करता है| तब उमा जवाब देती है " जी, हाँ .....हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप तोल कर रहे हैं? और जरा अपने इस साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के हॉस्टल के इर्द -गिर्द क्यों घूम रहे

थे और वहां से क्यों भागे गए थे|" गोपाल प्रसाद के पूछता है क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो तब उमा कहती है-" जी हाँ,मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ|

उमा का जवाब सुनकर बाप और बेटे रिश्ता तोड़ कर चले जाते हैं।

इस एकांकी में लेखक ने समाज में गोपाल प्रसाद जैसे दकियानूसी लोगों का पर्दाफाश किया है| बेटे को लाटसाहब बनाना है लेकिन बहु उनको कम पढ़ी- लिखी ही चाहिए | आज भी हमारे समाज में लड़कियों की शादी में लड़कियों की मर्जी जाने बिना शादी करवा देते हैं| समाज में कहीं स्त्री को अब भी वस्तु ही समझ रहे हैं लेखक ने सामाजिक व्यंग्य करके गोपाल प्रसाद जैसे लोगों का पर्दाफाश किया है|

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"